शिव आमंत्रण
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month
रक्षाबंधन विशेष
वर्ष : 13, हिन्दी (मासिक) , पेज 4

रक्षाबंधन पर विशेष

आइए... इस रक्षाबंधन पर स्वयं को पवित्र विचारों के बंधन में बांधने का संकल्प लेते हैं

पवित्रता की रक्षा का प्यारा बंधन

रक्षा बंधन

पवित्रता के प्यारे बंधन में बांध रहे परमात्मा
स्वयं को मन, वचन, कर्म से पावन बनाए रखना भी एक साधना है

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान

रक्षाबंधन... भाई-बहन के स्नेह, पवित्रता, निश्छल प्रेम, त्याग, समर्पण का पावन पर्व है। यह न केवल भाई-बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है, बल्कि स्वयं को मन-वचन-कर्म से पावन बनाने की दिव्य साधना का महा उत्सव भी है। हम सभी बचपन से रक्षाबंधन मनाते आए हैं लेकिन आइए, इस बार इसे यादगार, प्रेरक और जीवन परिवर्तनकारी उत्सव के रूप में मनाते हैं। मन-वचन-कर्म से स्वयं की स्वयं ही व्यर्थ व नकारात्मक विचारों से रक्षा करने और परमात्म श्रीमत अनुसार पवित्रता के बंधन में बंधने का संकल्प लेते हैं। एक ऐसा बंधन जो सुखदाई है, परिवर्तनकारी है और दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कल्याणकारी बंधन है।

पवित्रता का रक्षासूत्र बांधने का सही समय

दुनिया महापरिवर्तन के दौर से गुजर रही है। हर चीज अपने अति में जा रही है। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने से अनेक तरह की आपदाएं हमारे सामने हैं, वहीं वैश्विक स्तर पर छाए अशांति के बादल एक सुख-शांतिमय दुनिया के लिए कदापि ठीक नहीं हैं। ऐसे समय में परमात्म श्रीमत और पवित्रता का दिव्य मार्ग ही दुनिया को नया रास्ता, नई रोशनी दिखा सकता है। परमात्म शिक्षा के आधार से ही दुनिया में शांति स्थापित हो सकती है। विश्व शांति की इस मुहिम की शुरुआत भी हो चुकी है। परमधाम निवासी स्वयं परमपिता शिव परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर नई पावन, सतयुगी दुनिया की स्थापना की नींव रख रहे हैं। परमात्मा सहज राजयोग के ज्ञान से मानव को देवतुल्य बनने का महान मार्ग दिखा रहे हैं।

परमात्मा की पुकार को सुनकर आज लाखों भाई-बहनें पवित्रता के इस पावन मार्ग के राही बनकर निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। इससे न केवल उनका जीवन बदला है, बल्कि आज वह समाज में प्रेरक, आदर्श और मार्गदर्शक बनकर अनेकों का जीवन परिवर्तन करने के निमित्त भी बने हैं। परमात्मा की पुकार है- हे! मनुष्य आत्मन्... स्वयं को पहचानो और पवित्रता का रक्षासूत्र बांधकर अपना जीवन धन्य-धन्य बनाओ।

तिलक...

भारतीय संस्कृति में शुभ कार्य के शुरू करने के पूर्व तिलक किया जाता है। तिलक शुभ, विजय और आत्म स्मृति का प्रतीक है। तिलक भृकुटी के बीच किया जाता है। शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा भी भृकुटी के मध्य विराजमान रहती है। वास्तव में तिलक आत्मा की ज्योति स्वरूप का प्रतीक है। यह हमें याद दिलाता है कि दुनिया में रहते, कर्म करते सदा आत्म स्मृति बनी रहे। परमात्मा कहते हैं मेरे बच्चों! स्वयं को आत्मा समझ मुझे निरंतर याद करो तो मैं तुम्हें सर्व दुखों और पापों से मुक्त कर दूंगा और स्वर्ग की बादशाही दूंगा।

रक्षा सूत्र...

किसी भी धार्मिक कार्य में ब्राह्मण, यजमान को मंत्रोच्चार के साथ रक्षासूत्र बांधते हैं। चूंकि ब्राह्मण (ब्रह्मचर्य व्रत के साथ सभी नियमों का पालन करता हो) पवित्र होते हैं इसलिए रक्षासूत्र बांधने के लिए वह योग्य हैं। इसी तरह भाई-बहन का रिश्ता भी दुनिया में सबसे पवित्र होता है, इसलिए बहनें, भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधती हैं। आज हर एक मानव आत्मा को व्यसन, बुराइयों, गलत आदतों, नफरत, हिंसा से दूर रहने का रक्षासूत्र बांधने की जरूरत है।

उपहार या भेंट...

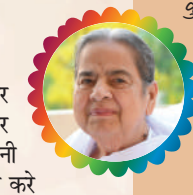

क्यों न इस बार रक्षाबंधन पर हर भाई अपनी बहन से संकल्प करे कि मेरी बहना आज से मैं तुम्हारी तरह हर एक बहन की लाज की रक्षा करुंगा। हर एक बहन-बेटी का मान रखूंगा। एक बहन के लिए भाई का दिया ये संकल्प और उपहार सबसे बड़ा उपहार है। परमात्मा कहते हैं मेरे बच्चों! तुम मुझे अपनी बुराइयों देकर सदा-सदा के लिए सुख- शांति, आनंद का वर्सा ले लो।

शांति को अपने भीतर जगाएं, विश्वास को अपने विचारों में उतारें

जब आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तो प्रेम, भाईचारा, करुणा और एकता जीवन का हिस्सा बन जाती है। शांत और स्थिर मन समाज में शांति का बीज होता है और वहीं से विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है। आइए शांति को अपने भीतर जगाएं, विश्वास को अपने विचारों में उतारें और एकता को अपने कर्मों में प्रकट करें। ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहन समाज में सुख-शांति, आनंद, प्रेम और विश्वास का संवाहक बनकर जन-जन तक ज्ञान पहुंचा रहे हैं। स्वयं के भीतर बढ़ने की यात्रा का भी प्रारंभ करें।

***- द्रौपदी मुर्मु,** राष्ट्रपति*

अध्यात्म हमें सिर्फ शांति का पाठ ही नहीं सिखाता, वह हमें हर कदम पर शांति की राह भी दिखाता है। विश्व शांति की अवधारणा, ये भारत के मौलिक विचार का हिस्सा है। मैंने इस आध्यात्मिक आंदोलन को वटवृक्ष की तरह विशाल होते देखा है। बदलाव तब होता है, जब अपने कथन और करनी में उतारा जाए और यही ब्रह्माकुमारी संस्था की आध्यात्मिक शक्ति का स्त्रोत है। मैंने हमेशा अनुभव किया है, ब्रह्माकुमारीज़ में शब्द कम, सेवा ज्यादा है। जहां हर बहन पहले कठोर तप और साधना में खुद को तपाती है।

***- नरेंद्र मोदी,** प्रधानमंत्री*

आखिर किसे रक्षा की जरूरत है...?

दुनिया का सबसे बड़ा बल पवित्रता का बल होता है। पवित्रता की शक्ति से ही विश्व परिवर्तन और नवयुग का सृजन होता है। कुंवारी कन्या की हम दैवी का रूप मानकर पूजन करते हैं। लेकिन जब कन्या का विवाह हो जाता है तो वह सबके सामने शीश नवाने लगती है। कन्या को उसकी पवित्रता के कारण दैवी स्वरूप का दर्जा दिया जाता है। जिसने पवित्रता की रक्षा कर ली तो उसका जीवन दिव्य, महान और आचरण योग्य बन जाता है। परमात्मा का भी दिव्य संदेश है कि यह नई सृष्टि के सृजन का संधिकाल चल रहा है मेरे बच्चों पवित्र बनो, योगी बनो।

***- राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी,** मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़*

नई सृष्टि के सृजन का आधार है पवित्रता

शिव आमंत्रण, आबूरोड

शास्त्रों में उल्लेख है कि जब-जब इस सृष्टि पर घोर अंधकार-अज्ञान, पाप कर्म बढ़ जाते हैं, तब-तब नई दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना और सृजन करने के लिए परमपिता परमात्मा युगे-युगे अवतरित होते हैं। वह पवित्रता के बल से मनुष्य को पतित से पावन बनाकर नई दुनिया के योग्य बनने की शिक्षा देते हैं। रक्षाबंधन इसी पवित्रता और नई शुरुआत का प्रतीक है। ये बंधन से अपनी पवित्रता की रक्षा करने का और नई दुनिया को सृजन का महापर्व है।

परमात्मा ने आकर नारी शक्ति को संपूर्ण पवित्रता का संकल्प कराया

रक्षा बंधन इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, उसका बोधक है। परमपिता शिव परमात्मा ने इस सृष्टि पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर कन्याओं-माताओं को मन-वचन-कर्म की संपूर्ण पवित्रता का संकल्प कराया। संपूर्ण पवित्रता का व्रत धारण करने के कारण और परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में शिरोधार्य करने वाले ब्रह्मा वत्स ब्राह्मण कहलाए। उन्हें ब्राह्मण पद पर आसीन किया। ज्ञान का कलश दिया और सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया। जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा ब्राह्मण पद पर आसीन होकर राखी बांधकर बहन-भाई के शुद्ध स्नेह और पवित्रता के शुद्ध संकल्प की रक्षा करती हैं।

ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है, दूसरे बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है

मानव स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी है। अतः मनुष्य जिस बात को बंधन समझता है, वह उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु रक्षा बंधन को बहनें और भाई त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बंधन है। बंधन दो प्रकार के होते हैं एक है ईश्वरीय बंधन और दूसरे हैं सांसारिक अर्थात् कर्मों के बंधन। ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है, परन्तु दूसरे प्रकार के बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है। रक्षाबंधन ईश्वरीय बंधन, आध्यात्मिक बंधन अथवा धार्मिक है। विचारवान् मनुष्य ईश्वरीय बंधन में तो बंधना चाहते हैं परन्तु माया के बंधन से मुक्त होना चाहते हैं। जैसे आज आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म क्षीण हो जाने से संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है, वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है। वरना यह त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्योहार है।

परमात्मा को ही संकट मोचन, दुःख भंजन और सुख दाता कहते हैं

सदा के लिए दुःखों और संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा कर सकते हैं। कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती है। परमात्मा को ही संकटमोचन, दुःख भंजन और सुख दाता कहते हैं। परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। प्रकृति तो उनकी दासी है। मनुष्यों को माया के बंधन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमपिता को पुकार कर कहते हैं- विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा...। गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने ही वाला था तो भगवान् ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है।

भगवान् ही हैं माताओं के चीर बढ़ाते हैं

दुष्टों से पवित्रता की रक्षा वास्तव में सर्व समर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए महाभारत का यह प्रसंग प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान को ही पुकारा था, क्योंकि तब कोई भी मित्र या सम्बन्धी उसकी रक्षा न कर सका था। ऐसी आपदा में लोग भगवान् को ही पुकारते हैं- हे प्रभु, हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो। भगवान् ही हैं जो माताओं-बहनों के चीर बढ़ाते हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुःख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं हे प्रभु, मुझे सहारा दो।

आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पांचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षाबंधन क्यों बांधते हैं? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बंधन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अतः 'रक्षाबंधन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बंधन है। बहन और भाई का संबंध बहुत पवित्र होता है। अतः बहनों का भाइयों को बंधन बांधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनाएंगे। मन, वचन और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों द्वारा रक्षाबंधन बंधवाने का अर्थ भी यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अतः इस दिन वह बंधन बांधते हैं, ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से रक्षाबंधन बांधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए आज यह पर्व 'विष तोड़क' अथवा 'पुण्य प्रदायक' पर्व के रूप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रूप में मनाने से हो सकती है।

पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री,
कथावाचक व पीठाधीश्वर, बागेश्वर धाम सरकार, गढ़ा, छतरपुर, मप्र

ब्रह्माकुमारी की दीदियां मोह माया से परे समाज के कल्याण और उत्थान के लिए कार्य कर रही हैं। इन दीदियों के चेहरे की चमक बताती है कि इन्होंने जीवन में कुछ पाया है। जीवन से खुश हैं। इनका समर्पण भाव लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। इनके जीवन से हमें सीख लेने की जरूरत है।

डॉ. लोकेश मुनी
संस्थापक, अहिंसा विश्व भारती, नई दिल्ली

यह ब्रह्माकुमारीज़ परिवार विश्व का एकमात्र परिवार है जो दुनिया के 140 देश के अंदर आध्यात्मिक मूल्यों के लिए, नैतिक मूल्यों के उत्थान के लिए, शांति और सद्भावना के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रहा है। ये कार्य माता और बहनों के द्वारा हो रहा है।

जगतगुरु देवमुरारी बापू,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीकृष्ण भूमि जन्म न्यास, अयोध्या-वृंदावन

लोगों में आज भी गलत भ्रांतियां हैं कि ब्रह्माकुमारी सनातन विरोधी कार्य कर रही हैं। मैंने इस ज्ञान को समझा है और संस्था को जाना है। मैं कह सकता हूं ब्रह्माकुमारी सनातन को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। यहां गीता ज्ञान दिया जाता है। परमात्मा से जोड़ने की शिक्षा दी जा रही है।

महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज
श्रीपंचायती उदासीन नया अखाड़ा, पटौदी, हरियाणा

आज ब्रह्माकुमार भाई-बहनों द्वारा गीता का पैगाम भारत के कोने-कोने में समुद्र पार भी पहुंचाया जा रहा है। हमारा ये कदम स्वर्णिम भारत की ओर बढ़ने वाला है। दुनिया के सारे लोग आबू के बाबू के काबू में आ जाएं तो सारी धरती जन्नत बन जाएगी।

महामंडलेश्वर स्वामी दिनेशानन्द भारती महाराज
रुड़की, उत्तराखंड

जन्म और मृत्यु के बीच जो है वह जीवन है। यही वेद, मनीषी और ब्रह्माकुमारी में सिखाया जाता है कि मैं कौन हूं। मेरा असली परिचय क्या है। मुझे जानना है तो सबसे पहले यह जानना होगा कि मैं आया कहां से हूं। ब्रह्मा बाबा ने यही संदेश दिया कि हम सभी आत्माएं हैं। सभी एक परमपिता शिव परमात्मा की संतान हैं।

महामंडलेश्वर स्वामी स्वतन्त्रानन्द गिरी
ऋषिकेश, उत्तराखंड

इतने संत-महात्मा होने के बाद भी सनातन धर्म कितना बिखरा हुआ है। सभी को एक होना पड़ेगा। ब्रह्माकुमारी ऐसी संस्था है जहां किसी से कोई धर्म, संप्रदाय, जाति नहीं पूछी जाती है। गीता ही भगवान का गीत है, जिससे ही सभी के अंदर ज्ञान निकला है। ये बहनें ज्ञान से लोगों को आपस में जोड़ रही हैं।

महामंडलेश्वर कमल किशोर महाराज, सहारनपुर, उप्र

परमात्मा एक शक्ति है, एक ऊर्जा है। वह जब इस धरती पर आए तो ब्रह्मा तन का आधार लेकर सृजन का कार्य किया। मैंने ब्रह्माकुमारीज़ में सीखा है कि यहां कुछ त्यागना है तो बुराई को त्याग कर जाओ। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी श्वेत वस्त्रों में संत हैं। प्रेम क्या होता है वह यहां आकर सीख सकते हैं।

महामंडलेश्वर स्वामी अखलानन्द अक्रिय महाराज
हरिद्वार

ब्रह्माकुमारीज़ के जो सानिध्य और संपर्क में आता है तो उसका जीवन पूरी तरह बदल जाता है। व्यक्ति के जीवन में सकारात्मकता आ जाती है। यहां जीव को उसका मूल बताने का प्रयास किया जा रहा है। हमारा सनातन धर्म प्रश्न और उत्तर को लेकर है। जब तक जीवन में प्रश्न नहीं होगा तो समाधान नहीं मिल सकता है।

परमात्मा कहते हैं, हे!

आत्माओं... काम महाशत्रु है

अब मैं कलियुग को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं

शिव आमंत्रण, आबूरोड

संकट की वेला में द्रौपदी की पुकार सुनकर भगवान उसका चीर बढ़ाते हैं। शास्त्रों में तो एक द्रौपदी और एक दुर्योधन का वर्णन किया गया है। लेकिन वर्तमान स्थिति में देखा जाए तो यह चरित्र-चित्रण सारे समाज की दुर्दशा का है। जब व्यभिचार की अति हो जाती है और पाप का घड़ा भर जाता है तो कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के संगमयुग की वेला में गीता के भगवान शिव स्वयं अवतरित होकर यह महावाक्य उच्चारते हैं कि 'हे आत्माओं! काम महाशत्रु है। यही सबसे बड़ी हिंसा है जो आदि-मध्य-अन्त दुःख देने वाली है। इसी के द्वारा यह सृष्टि पतित बन गई है, जहां घर-घर में काम कटारी चलती है। काम- विकार नर्क का द्वार है। तुमने ही मुझ पतित पावन परमात्मा को पुकारा है, अब मैं इस कलियुग को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं। अब इस कलियुगी पुरानी दुनिया का विनाश और सतयुगी नई दुनिया की पुनर्स्थापना होनी है। उस सतयुगी देवलोक में सम्पूर्ण निर्विकार आत्माएं ही जन्म ले सकेंगी।

पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है। यदि तुम पवित्र बनोगे तो नूतन विश्व के मालिक बनोगे, वरना विनाश को प्राप्त हो जाओगे। अतः अब मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि सारे कल्प के अपने इस अन्तिम जन्म में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो और पवित्र बनो। जो मनुष्य परमपिता परमात्मा शिव की इस कल्याणकारी आज्ञा को मानकर पवित्रता के बंधन में बंधने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं उन्हीं की मन-वचन-कर्म से, काम विकार से रक्षा के लिए परमात्मा शिव उन्हें रक्षाबंधन के पवित्र सूत्र में बंधवाते हैं जो उनके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करने की प्रतिज्ञा का प्रतीक है। इस प्रकार इस पावन पर्व का प्रारम्भ स्वयं परमात्मा द्वारा पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। वर्तमान में यह वही समय चल रहा है।

द्वापरयुग से देवी-देवता चले जाते हैं वाम मार्ग में...

पुराणों में रक्षाबंधन को लेकर यही उल्लेख है कि जब असुरों से हार कर इन्द्र ने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था तो उन्होंने इन्द्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था और इसके फलस्वरूप अपना खोया हुआ स्वराज्य पुनः प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और उन्होंने कहा था इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जाएंगे। यहां प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति, कैसे होती है? यह त्योहार विष तोड़क पर्व, पुण्य प्रदायक पर्व आदि नामों से भी प्रसिद्ध है। यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देता है।

अतः यदि हम ऐसा बंधन बांधे तो निश्चय ही उपर्युक्त प्राप्ति हो सकती है। वास्तव में उपर्युक्त सभी बातों का आध्यात्मिक अर्थ है। यह अर्थ सारे कल्प की कहानी जानने से समझ में आता है। सतयुग और त्रेता में तो सभी मनुष्यात्माएं पूर्ण पवित्र (निर्विकारी) थीं, इसलिए उन्हें स्वर्ग का सुख और स्वराज्य प्राप्त था और श्रेष्ठाचार के कारण वे देवी-देवता कहलाती थीं। द्वापरयुग से लेकर वही देवी-देवता वाम मार्ग में चले गए अर्थात् विकारों के वश हो गए और इन काम-क्रोधादि विकारों से हारकर उन्होंने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था। अब संगम समय फिर से परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पतितों को पावन, सच्चे ब्राह्मण बना रहे हैं। अतः जो मनुष्यात्माएं पवित्रता का बंधन बांधेंगे वे पुनः देवपद प्राप्त करेंगी अर्थात् अपना खोया हुआ स्वराज्य राज्य-भाग्य प्राप्त करेंगी और यम के दंड से भी छूट जाएंगी और मुक्ति भी प्राप्त करेंगी।

शिव शक्तियां कराती हैं पवित्रता की प्रतिज्ञा का पावन कर्तव्य

गोपीवल्लभ परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सच्चा 'रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ' रचकर ईश्वरीय ज्ञान व योग और पवित्रता के बल से सर्वप्रथम अबला नारियों को सबला अथवा शिव-शक्तियां बनाते हैं। भारत में दुर्गा, अम्बा, काली, शीतला इत्यादि शिव शक्तियों का गायन-पूजन आज तक होता है। वास्तव में इन्हीं शिव शक्तियों अथवा चेतन ज्ञान-गंगाओं द्वारा मनुष्यों को रक्षाबंधन बांध कर ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाने का पावन कर्त्तव्य चलता है। ब्राह्मणों द्वारा अपने यजमानों को राखी बांधने की प्रथा भी प्रचलित है। पुराने समय में ब्राह्मण ब्रह्मचर्य सहित सभी नियमों का पालन करते थे इसलिए वह इसके योग्य थे। ब्रह्मा मुख वंशावली शिव-शक्तियां ही वह सच्ची बालब्रह्मचारिणी ब्राह्मणियां (ब्रह्माकुमारियां) हैं जो स्वयं पवित्रता के व्रत को धारण करके अन्य मनुष्यों को भी इस कल्याणकारी बंधन में बांधने की अलौकिक सेवा करती हैं। पावन बनने के लिए वे पुरुषों को यह अनोखी युक्ति बताती हैं कि सभी मनुष्य-आत्माएं एक ही पिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते से भाई-बहन हैं।

यह त्योहार कब और कैसे शुरू हुआ?

ऊपर जो कल्प की कहानी बताई गई है, उससे इस प्रश्न का समाधान मिल जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा के कमल मुख द्वारा जिन नर-नारियों ने वास्तविक ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त करके विकारों रूपी विष को तोड़ा था और स्वयं को पुण्यात्मा बनाया था, उन सच्चे ब्राह्मणों अथवा सच्चे ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने जन-जन को पवित्रता का प्रतीक यह रक्षाबंधन बांधा। जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सीखकर उस बंधन को निभाया, उन्होंने मुक्ति और जीवनमुक्ति प्राप्त की। अतः इस बंधन को आज तक भी मनाया जाता है और आज ब्राह्मण और बहनें यह बंधन बांधते हैं।

पवित्रता की राखी

सन्यासियों ने तो नारी को नर्क का द्वार कहकर अपवित्रता का सारा दोष नारी पर ही लगा दिया है। परन्तु वास्तव में नर और नारी दोनों ही पतित और विकारी बनते हैं। प्रायः नारियों की भेंट में नर ही अधिक कामी होते हैं। द्रौपदी की तरह कोई पुरुष अपनी लाज की रक्षा के लिए परमात्मा को नहीं पुकारते हैं। काम विकार के लिए प्रस्ताव भी प्रायः पुरुष ही करते हैं। कलियुग के अन्त के समय का पतित समाज भी पुरुष प्रधान होता है। अतः जैसा पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि भाइयों के पवित्र बनने से ही बहनों की लाज बच सकती है। अतः परमपिता शिव परमात्मा पुरुषों को ही रक्षाबंधन बंधवा कर उनसे ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाते हैं। इसीलिए भाइयों को बहनों द्वारा राखी बांधने की प्रथा चली आती है।

मुक्ति जीवनमुक्ति की प्राप्ति

रक्षाबंधन बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। यदि ज्ञान-युक्त रीति से इस बंधन को निभाया जाए तो मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसका भाव यही है कि सृष्टि की आदि (अर्थात् स्थापना काल) में परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा के निर्देश से सच्चे ब्राह्मणों ने तथा शिव-शक्ति रूपा बहनों ने मनुष्यों को यह बंधन बांधा था कि वे पवित्र बनें अर्थात् काम, क्रोधादि पर विजय प्राप्त करें।

काल के पंजे से रक्षा

काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें कालों का काल महाकाल, महाकालेश्वर, अमरनाथ, प्राणनाथ कहा जाता है। काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युंजय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव की शरण में जाने की कामना करते हैं। परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा की महिमा में कहा जाता है-जाखो राखे साइयां, मार सके न कोय। बाल न बांका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं?

1937
में संस्था की शुरुआत

140
देशों में सेवाकेंद्र संचालित

06
हजार सेवाकेंद्र देश-विदेश में संचालित

50
हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित

25
लाख नियमित विद्यार्थी

02
लाख बालब्रह्मचारी युवा सदस्य

1970
में विदेशी सरजमीं पर शुरुआत

07
पीस मैसेंजर अवार्ड यूएनओ से दिए

25
प्रभागों के माध्यम से समाज के सभी वर्ग की सेवा

नारी शक्ति ने उठाया विश्व बदलाव का बीड़ा

ब्रह्माकुमारीज़
सेवा, साधना और समर्पण के 90 वर्ष

शिव आमंत्रण, आबूरोड

वर्ष 1936 में अध्यात्म की एक ज्योति प्रज्जवलित हुई, जिसके दिव्य प्रकाश, आभा, सकारात्मक और पवित्र ऊर्जा ने संकल्प से सिद्धी की महान यात्रा को साकार किया। उस ज्योति का स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का संकल्प आज सामाजिक परिवर्तन का केंद्रबिंदु बनकर समूचे विश्व को दिव्य ज्ञान की रोशनी से प्रकाशित कर कर रहा है। यह ज्योति थी ब्रह्माकुमारीज़ की स्थापना, जिनके प्रेरणास्त्रोत थे दादी लेखराज, जिन्हें प्यार से सभी ब्रह्मा बाबा के नाम से जानते हैं। अपनी 90 वर्ष की यात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ ने आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग की शक्ति, सेवा साधना और उच्च चारित्रिक मूल्यों के बल पर लाखों लोगों के जीवन को प्रकाशमय किया है। सेवा की इस तपस्थली में हजारों लोग समर्पित भाव से विश्व शांति के स्वप्न को साकार करने में तपस्यारत हैं।

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के विचार से विश्व में आई क्रांति

श्वेतवस्त्रधारिणी, बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्विनी ब्रह्माकुमारियों ने यह साबित कर दिखाया है कि यदि नारी को मौका मिले तो वह पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं। वह अदम्य साहस, शक्ति और सामर्थ्य से भरपूर है। ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज आध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। परमात्मा से महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान नारी शक्ति द्वारा संचालित दुनिया का सबसे बड़ा और एकमात्र संगठन है। यहां मुख्य प्रशासिका से लेकर प्रमुख पदों पर महिलाएं ही हैं। संगठन की सारी जिम्मेदारियां बहनें संभालती हैं और भाई उनके सहयोगी के रूप में साथ निभाते हैं।

संस्था की सामाजिक सेवाएं...

ब्रह्माकुमारीज़ 90 वर्षों से समाज के सभी वर्गों के उत्थान, सशक्तिकरण और विकास के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रही है। समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के लिए देशभर में मूल्य शिक्षा, राजयोग थॉट लैब, श्रीडी हार्टकेयर, रिवर्स डायबिटीज, नशामुक्त भारत अभियान, विहासा- वैल्यु इन हेल्थकेयर, रक्तदान, स्वास्थ्य शिविर, मेरा भारत स्वस्थ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर किसान अभियान, यौगिक खेती अभियान, यौगिक गृह वाटिका अभियान, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जेल सुधार, स्वच्छ भारत मिशन, दिव्यांग सेवा गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। इनके माध्यम से समाज के सभी वर्गों को व्यापक स्तर पर लाभ मिल रहा है।

चौथी पास से लेकर पीएचडी बहनें

राजयोग ध्यान का ही कमाल है कि संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका. राजयोगिनी दादी जानकी जो मात्र चौथी कक्षा तक पढ़ीं थी लेकिन 60 वर्ष की उम्र में वह विदेशी सरजमीं पर पहुंचीं। 90 साल की उम्र तक उन्होंने अकेले 100 से अधिक देशों में भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का परचम लहराया। अनेक ऐसी बहनें हैं जो आठवीं कक्षा से कम पढ़ी-लिखीं हैं लेकिन जब वह मंच राजयोग की शक्ति संबोधन देती हैं तो लोग दंग रह जाते हैं। कई बहनें डॉक्टर, इंजीनियर, साइंटिस्ट, वकील, प्रोफेसर, से लेकर सिंगर तक हैं जिन्होंने बाकायदा प्रोफेशनल डिग्री लेने के बाद आध्यात्म की राह अपनाई है।

शांति पदक से सम्मानित

यूएनओ की ओर से ब्रह्माकुमारीज़ को वर्ष 1981 और वर्ष 1986 में संयुक्त राष्ट्र शांतिदूत पुरस्कार मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को प्रदान किया गया। वहीं 1987 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति संदेशवाहक पुरस्कार से सम्मानित किया। इसी वर्ष पांच राष्ट्रीय शांति संदेशवाहक पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा भी कई पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा युवाओं को नैतिक मूल्य और आध्यात्मिकता की शिक्षा देने के लिए देश के 36 विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू करके मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता के डिप्लोमा व डिग्री कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। इंजीनियरिंग कॉलेजों के साथ ऑनलाइन कोर्स शुरू करने के लिए एमओयू हुआ। विद्यार्थी भी मेडिटेशन सीखने के लिए आगे आ रहे हैं।

विश्व को सुंदर, सुरक्षित संस्कारवान परिवार बनाने में अपना योगदान दें

रक्षाबंधन हमें केवल एक पारिवारिक परंपरा का स्मरण नहीं कराता, बल्कि यह आत्मा और परमात्मा के अटूट, पवित्र और प्रेममय संबंध का दिव्य उत्सव है। परमपिता शिव, जो समस्त आत्माओं के सनातन रक्षक हैं, उनके साथ राजयोग का संबंध ही जीवन की सबसे सुरक्षित रक्षा-सूत्र है। यह सूत्र हमें भय, तनाव, क्रोध, असुरक्षा और नकारात्मकता से मुक्त कर आत्मबल, शांति और दिव्य शक्तियों से संपन्न बनाता है। आइए, इस रक्षाबंधन पर हम केवल रक्षा-सूत्र ही न बाँधें, बल्कि एक-दूसरे की गरिमा, विश्वास और मानवीय मूल्यों की रक्षा का संकल्प भी लें। अपने परिवार, समाज और राष्ट्र में प्रेम, सहयोग और आध्यात्मिक चेतना का वातावरण बनाकर विश्व को एक सुंदर, सुरक्षित और संस्कारवान परिवार बनाने में अपना योगदान दें।

राजयोगिनी जयंती दीदी,
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़

रक्षाबंधन का पावन पर्व केवल भाई-बहन के स्नेह का उत्सव नहीं, बल्कि आत्मा और परमपिता परमात्मा के अटूट, पवित्र और दिव्य संबंध का भी स्मरण कराता है। आज के समय में जब मनुष्य अनेक प्रकार की मानसिक अशांति, भय, तनाव और नकारात्मकताओं से घिरा हुआ है, तब परमात्मा शिव द्वारा बंधा ज्ञान, योग और पवित्रता का रक्षासूत्र ही जीवन की वास्तविक सुरक्षा का आधार बनता है। परमात्मा हमें स्मरण कराते हैं कि सच्ची रक्षा बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि आत्मिक जागृति, श्रेष्ठ संस्कारों और ईश्वरीय स्मृति से होती है। जब हम राजयोग के माध्यम से स्वयं को आत्मा और परमात्मा को अपना पिता अनुभव करते हैं, तब मन में शांति, बुद्धि में स्पष्टता और जीवन में शक्ति का संचार होता है। यही आध्यात्मिक शक्ति हमें विकारों, तनाव और नकारात्मक प्रवृत्तियों से सुरक्षित रखती है। आइए, इस रक्षाबंधन पर हम केवल एक-दूसरे की कलाई पर रक्षा सूत्र ही न बाँधें, बल्कि अपने जीवन में पवित्रता, प्रेम, मर्यादा, करुणा और श्रेष्ठ संकल्पों का भी सूत्र धारण करें।

राजयोगिनी मृन्नी दीदी,
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,
ब्रह्माकुमारीज़

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः ब्र.कु. कोमल » संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र